सर्वोत्तमस्तोत्र – २०११

दि. २८/०४/२०११

<u>शास्त्रीय पहेलु</u>

भक्ति = चिदंश अंशिरूपसच्चिदानंदके

माहात्म्य+तादात्म्यकी

रसात्मिकी श्रद्धा निष्ठा अनुभूति विश्वास

<u>Definition of Bhakti</u>

Bhakti is a total and artistic response of self-conscious part to the totality of the truth.

<u>Neuro Psychological angle</u>

Bhakti is synesthetic total involvement into the multi-dimensional reality of Brahman.

पूर्वावस्था

जीवात्मा

१) साक्षि-अवस्था= विषयावभासन आत्मावभासन

२) दृष्टृकर्तृभोक्तृ-अवस्था= ममता अहंता

३) बद्ध-अवस्था = काम लोभ मोह क्रोध मद मात्सर्य

- ५ ज्ञानेन्द्रिय
- ५ कर्मेन्द्रिय

- हान
- उपादान
- उपेक्षा

दि. २९/०४/२०११

४) साधनावस्था= सर्वोपादनता =ब्रह्मा +सर्वकर्तृता स्वअंशिता

सर्वान्तर्यामिता=विष्णु स्वान्तर्यामिता

सर्वशेषरूपता=रुद्र स्वेतरविषयकराग रागास्पदता=रूप

तादात्म्य=ब्रह्मात्मकता माहात्म्य

सर्वोत्तमस्तोत्र – २०११

माहात्म्य (सर्व) + तादात्म्य (सर्व)

शरण

समर्पण

तनुवित्तजा

माहात्म्यज्ञान → ← सर्वात्मभाव

मानसी

भक्ति (प्रेमासक्तिव्यसन)

निरोध

दि. ३०/०४/२०११

प्रतिज्ञा ↓ हेतु ↓ उदाहरण ↓

१)वल्लभः सुखसेव्यो → भक्तसेवितत्वात् अवतीर्णरामकृष्णवत्

२)वल्लभो दुराराध्यो → दुर्लभांघ्रिसरोरुहत्वात् अक्षरपुरुषोत्तमौ विराड्वत् वा

१)
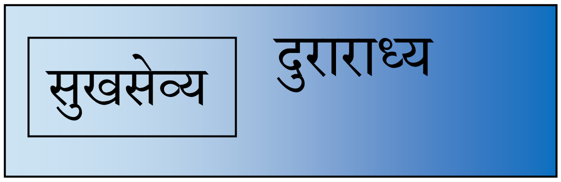

२)
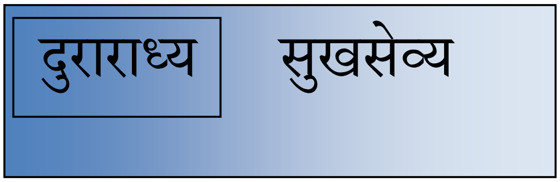

३)
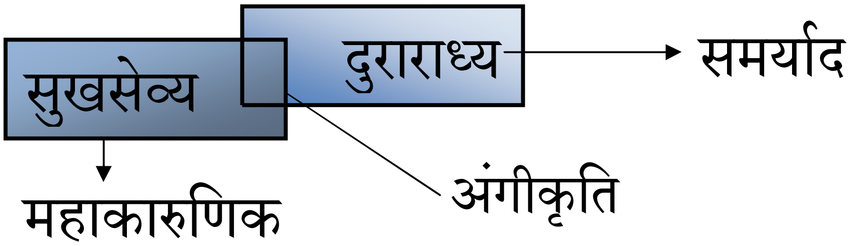

१) [(भक्तसेवित) → सुखसेव्य]

[(दुर्लभा.) → दुराराध्य]

भक्त्या माम् अभिजानाति, (भगवद्गीता १८/५५)

भक्त्या तु अनन्यया शक्य (भगवद्गीता ११/५४)

इहैकस्थं जगत् सर्वं पश्य आद्य सचराचरं (भगवद्गीता ११/७)

दिव्यचक्षु + स्वचक्षु = पुष्टिभक्ति

दि. ०२/०५/२०११

सर्वोत्तमस्तोत्र - २०११

१)

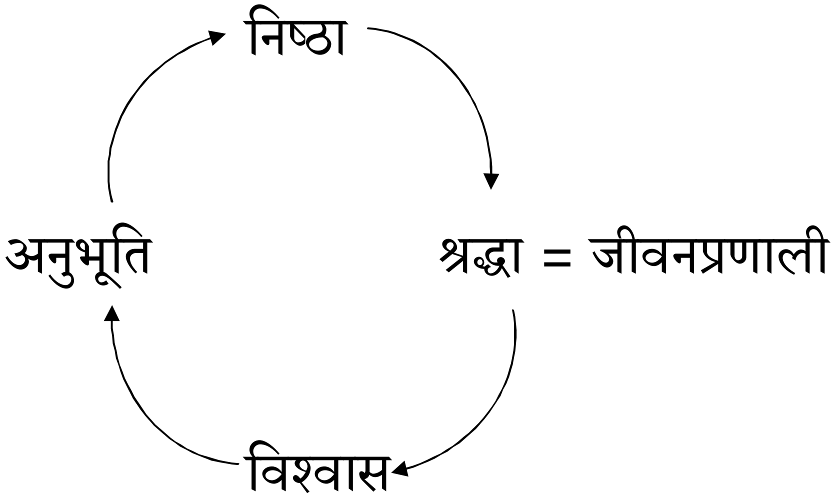

२)

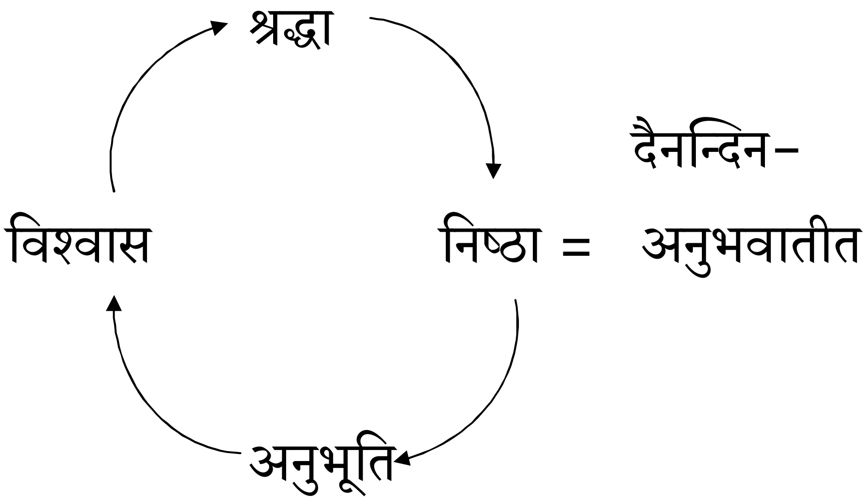

३)

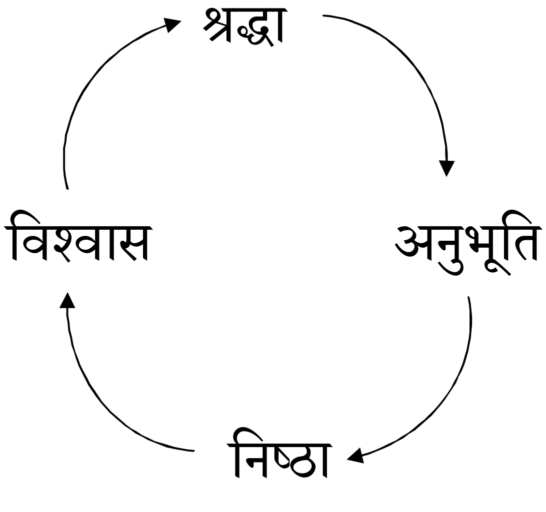

सर्वोत्तमस्तोत्र - २०११

दि. ०३/०५/२०११

गीतचतुष्टयी

साधनरूप	फलरूप	फलरूप	साधनरूप
आंतरसंयोग	बाह्यसंयोग	आंतरसंयोग	बाह्यवियोग
(वेणुगीत)	(गोपीगीत)	(युगलगीत)	(भ्रमरगीत)

दि. ०६/०५/२०११

१)दैहिकी= क्रियात्मिका कामना

२)ऐन्द्रियिकी=विषयरागद्वेषोपेक्षात्मिका

३)आन्तकरणिकी=सुखदु:खोभयानुभयात्मक

४)आत्मिक=आत्मसुखात्मिका (स्वरूपानुपाति/देहानुपाति)

५)भागवती=भक्तिरूपा

६)पारमात्मिकी=अन्त:प्रेरणात्मिकाश्रद्धारूपा

७)ब्राह्मिकी=सर्वानुमोदिका

सर्वोत्तमस्तोत्र – २०११

दि. ०७/०५/२०११

- धर्म
  - प्रयोजन
    - द्वैत
    - अद्वैत
    - तादात्म्य
    - शून्य
  - उपाय
    - द्वैत
    - अद्वैत
    - तादात्म्य
    - शून्य
- दर्शन
  - परमार्थ
    - द्वैत
    - अद्वैत
    - तादात्म्य
    - शून्य
  - व्याख्या
    - द्वैत
    - अद्वैत
    - तादात्म्य
    - शून्य

परमार्थ	व्याख्या	उपाय	प्रयोजन
१)श्रौत			
अन्तर्लीन नामरूपकर्मात्मक सत् चिद् आनन्द	तद्एतन्नामरूप- कर्म त्रयं सद् एकम् अयमात्मा आत्म: एक: सन्न एतत् त्रयम्	श्रुत्युक्तज्ञान- कर्मभक्ति- आदि सम्यक्	ब्रह्म- तादात्म्य- श्रद्धानिष्ठा- विश्वास- अनुभूति
२)बौद्ध			
दु:ख क्षणिक स्वलक्षण	शून्य	प्रज्ञा (दृष्टि, संकल्प) शील (वाचा, कमंत, आजीव) समाधि (व्यायाम, साति, समाधि)	निब्बान
३)जैन			
अजीव जीव मोक्ष	अनेकांत सप्तभंगी	दर्शन ज्ञान चरित्र संवरनिर्जरकेउपाय प्रथमउपाय तत्त्वार्थश्रद्धा	मोक्ष

आस्रव बन्ध ← अविद्या

संवर निर्जर

वह्ळकाई हिज्वाम् आदधाइति यो अज्ररदाई मांथ्रं चश्ते

वृकाय जिह्वाम् आदधाति य: अश्रद्धाय मंत्रं चष्टे

(वरुको जिह्वा देवे है जो अश्रद्धावान्‌को मंत्र बतावे है)